

Modernization of Agriculture in Charkhi Dadri: a comparative Study

Sunil Kumari, Dr. Jaidev Prasad Sharma

Scholar of J.J.T. University,
Guide of J.J.T. University, Chudela (Rajasthan)

Submitted: 01-07-2022

Revised: 10-07-2022

Accepted: 13-07-2022

प्रस्तावना:—कृषि आधुनिकीकरण के अन्तर्गत कृषि के आधुनिक यंत्रों द्वारा कृषि में विकास, कृषि सुधार, नवीन सिंचाई पद्धति आदि के विस्तार में आधुनिक कृषि यंत्रों का अति महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि में फसलों की बुवाई के लिए, बीज बाने, सिंचाई करने, फसल की कटाई, अनाज की सफाई, खेतों को समतल करना, फसल को खेत से मण्डी तक परिवहन करने आदि कार्यों के लिए कृषि यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। इसे ही कृषि यंत्रीकरण या कृषि आधुनिकीकरण कहते हैं।
मुख्य बिन्दू: आधुनिकीकरण, महत्वपूर्ण, कम्बाईन परिवर्तन, उत्पादन।

1. शोध क्षेत्र में कृषि संसाधनों की पहचान करना।
2. शोध क्षेत्र में कृषि आधुनिकीकरण की जाँच करना।
3. शोध क्षेत्र में आधुनिकीकरण से आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ:-

1. शोध क्षेत्र में कृषि कार्यों में मशीनीकरण जैसे- ट्रैक्टर, हैरो, थ्रेसर, कम्बाईन आदि का अधिक से अधिक प्रयोग होने लगा है जिससे कृषि उत्पादन में परिवर्तन दिखाई दे रहा है।
2. शोध क्षेत्र में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए लालचवश रसायनों जैसे यूरिया, डी.ए.पी, कीटनाशक इत्यादि के प्रयोग से भूमि का निम्नीकरण होता रहा है।

शोध का उद्देश्य:-



चरखी दादरी : स्थिति एवं विस्तार

जिले का अक्षांशीय विस्तार 28°22' उत्तरी अक्षांश से 28°49' उत्तरी अक्षांश तक तथा देशांतरीय विस्तार 75°149' पूर्वी देशांतर से 76°27' पूर्वी देशांतरों के मध्य में स्थित है। इसके पूर्व में झज्जर, पश्चिम में भिवानी, उत्तरमें रोहतक व दक्षिण में महेन्द्रगढ़ जिले स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1370.11 वर्ग

किलोमीटर है। यह भारत की राजधानी नई दिल्ली से मुख्यतः 1126.6 किलोमीटर व हरियाणा की राजधानी चण्डीगढ़ से लगभग 295 किलोमीटर दूर स्थित है। चरखी दादरी जिले के अन्तर्गत 174 गाँव आते हैं। यह नीचे दिये गये मानचित्र में दर्शाया गया है।

कृषि का आधुनिकीकरण:-

1. रासायनिक उर्वरक:-

कृषि भूमि की उत्पादकता उसमें उपस्थित खनिज तत्वों, पोषक तत्वों व ह्यूमस की मात्रा पर निर्भर करती है। अगर हम निरन्तर किसी भूमि पर कृषि कार्य करते रहते हैं तो उसमें पोषक तत्वों की

कमी हो जाती है, जिसे पूरा करने के लिए हमें कृषि में खाद डालने की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त मृदा के उपजाऊपन को बनाए रखने के लिए फसलों का हेर-फेर, कृषि भूमि को परती छोड़ना आदि आवश्यक है।

चरखी दादरी जिला

उर्वरकों का उपयोग वर्ष 2015-18 (टनों में)

वर्ष	नाइट्रोजन		फास्फैटिक		पोटाश पूरक		कुल
	मात्रा टनों में	वृद्धि प्रतिशत	मात्रा टनों में	वृद्धि प्रतिशत	मात्रा टनों में	वृद्धि प्रतिशत	
2015	13987	-	4175	-	136	-	18298
2016	16146	15.45	4082	2.22	453	233.30	20681
2017	16300	0.95	7900	93.50	157.9	-65.14	24357.9
2018	19290	3.80	8740	10.63	705	346.48	26365

स्रोत: कृषि उपनिदेशक चरखी दादरी, 2019

2. उन्नत किस्म के बीज:

प्राचीन समय में कृषि में परम्परागत बीजों का ही प्रयोग किया जाता था। बीजों को पहले ही घर पर रखा लिया जाता था। परन्तु वर्तमान में बाजार से उपलब्ध एच.वाई.वी. बीजों का कृषि उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1960 के दशक में हरित क्रांति के आगमन के बाद कृषि में उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग होना शुरू हो गया है। अधिक उपज देने वाले किस्म के बीज अनुवांशिक रूप से उन्नत उच्च उपज किस्मों द्वारा उत्पादित बीज हैं। पारम्परिक बीज पौधे की विशेषताओं को संशोधित या बढ़ाए बिना लंबी अवधि के लिए उगाए गए किस्मों द्वारा उत्पादित बीज हैं।

भारत में कृषि में 1960 के दशक के गहन तक पारम्परिक बीजों का प्रायोग किया जाता था जिनकी उपज अपेक्षाकृत कम थी। उन्हें सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती थी। किसान उर्वरकों के रूप में गाय का गोबर आदि का प्रयोग करते थे। 1960 के बाद उच्च उपज बीज (एच.वाई.वी) का प्रयोग शुरू

हुआ। इससे सिंचाई और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ गया। इस कृषि में सिंचाई की अधिक आवश्यकता पड़ने लगी। इसके साथ ही गेहूँ व चावल के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई जिसके कारण इसे हरित क्रांति भी कहा जाता है।

3. कीटनाशक पदार्थ व पौध संरक्षण

कृषि फसलों के उत्पादन की अच्छी मात्रा प्राप्त करने के लिए चरखी दादरी जिले में कीटनाशकों का उपयोग भी किया जाता रहा है। फसलों में लगने वाले कीट बीमारियों के कारण उत्पादन कम प्राप्त होता है। और इसके घटने का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता है। कृषि फसलों में फफूँद, माइक्रोप्लाजमा, निमेटोड्स, सफेद सुड़ी, एवं विभिन्न प्रकार लटों का प्रकोप फसलों पर होता रहता है। इन सबके नियन्त्रण व रोकथाम के लिए चरखी दादरी जिले में कीटनाशकों का प्रयोग होना भी महत्वपूर्ण है। जिससे यहाँ की कृषि फसलों के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए आवश्यक भी है, जो कृषि एवं कृषि संसाधन के प्रभावी बनाने के लिए बहुत आवश्यक भी है।

तालिका संख्या 8.4

चरखी दादरी जिला

कीटनाशकों का प्रयोग वर्ष 2015-18

वर्ष	कीटनाशक प्रयोग (टन में)
2015	115
2016	116
2017	37.6
2018	9.02

स्रोत: चरखी दादरी आयुक्त कृषि विभाग, 2019

4. कृषि मशीनीकरण

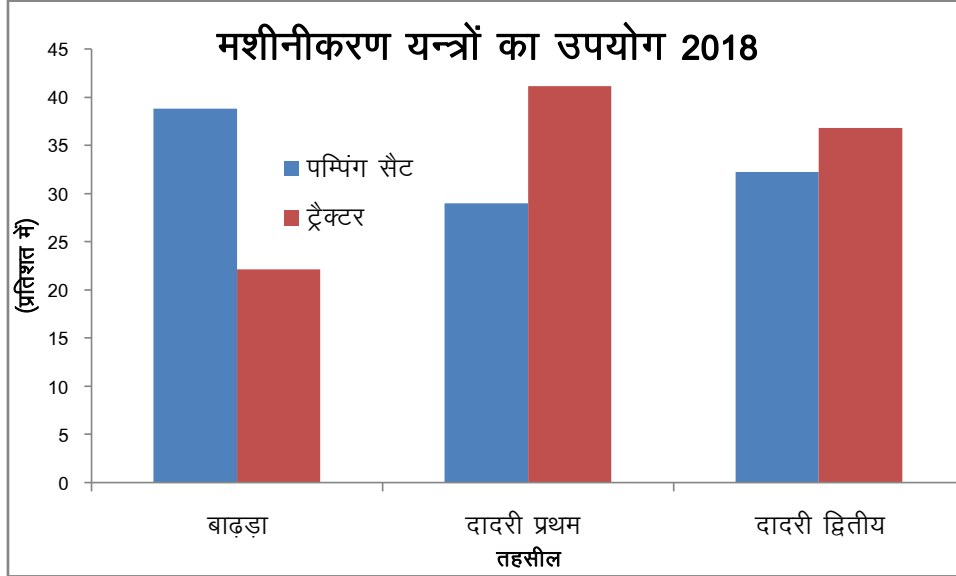
कृषि संसाधन विकास में प्रमुख कृषि मशीन एवं यन्त्रों में उन्हें शामिल किया गया है जिनके द्वारा कृषि कार्य किया जाता है तथा इनके अभाव द्वारा कृषि कार्य करना सम्भव नहीं है। ये कृषि मशीन व यन्त्र बहुत उपयोगी और कीमती भी होते हैं। इनके

द्वारा कृषि विस्तार, कृषि सुधार, सिंचाई विस्तार, फसल बुवाई व फसल कटाई तथ कृषि उत्पादन को मण्डियों भण्डारण तक पहुँचाने में सहायक है। अतः अध्ययन क्षेत्र चरखी दादरी जिले में आधुनिक कृषि मशीन एवं यन्त्र आदि का अध्ययन आवश्यक है जो क्रमशः निम्न प्रकार है-

चरखी दादरी जिला

यन्त्रों का उपयोग 2018

क्र.सं.	विकास खण्ड	ट्रैक्टर		पम्पिंग सैट	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	बाढ़ड़ा	1743	22.12	7667	38.78
2.	दादरी प्रथम	3238	41.10	5729	28.98
3.	दादरी द्वितीय	2898	36.78	6372	32.24
4.	कुल जिला	19768	100	7879	100



निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र में आधुनिकीकरण के बढ़ने से उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

- [1]. Singh, Srinath (1976) "Modernization of Agriculture" (A case study in Eastern U.P.), Hesitage Publishers, New Delhi.
- [2]. Singh, Jasvir (1976) An Agricultural Geography of Haryana" Vishal Publication University Campus, Kurukshetra.
- [3]. Singh V.R. (1962) 'Land utilization in the neighbourhood of Mirzapur U.P. Ph.D Dissertation, Dept. of Geography Banaras Hindu University Varanasi (Unpublished)
- [4]. सिंह काशी नाथ एवं सिंह जगदीश आर्थिक भूगोल के मूल तत्त्व, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर ।
- [5]. सिंह छिद्दा (1984) खरीफ फसलों की वैज्ञानिक खेती एवं फसल परिस्थिती," भारती प्रकाशन, मेरठ ।
- [6]. Stamp L.D. 1938 'Land utilization maps of India, Madras Geog. association, vol. 13. 1,